सरोज ने समझा

पानी का मोल

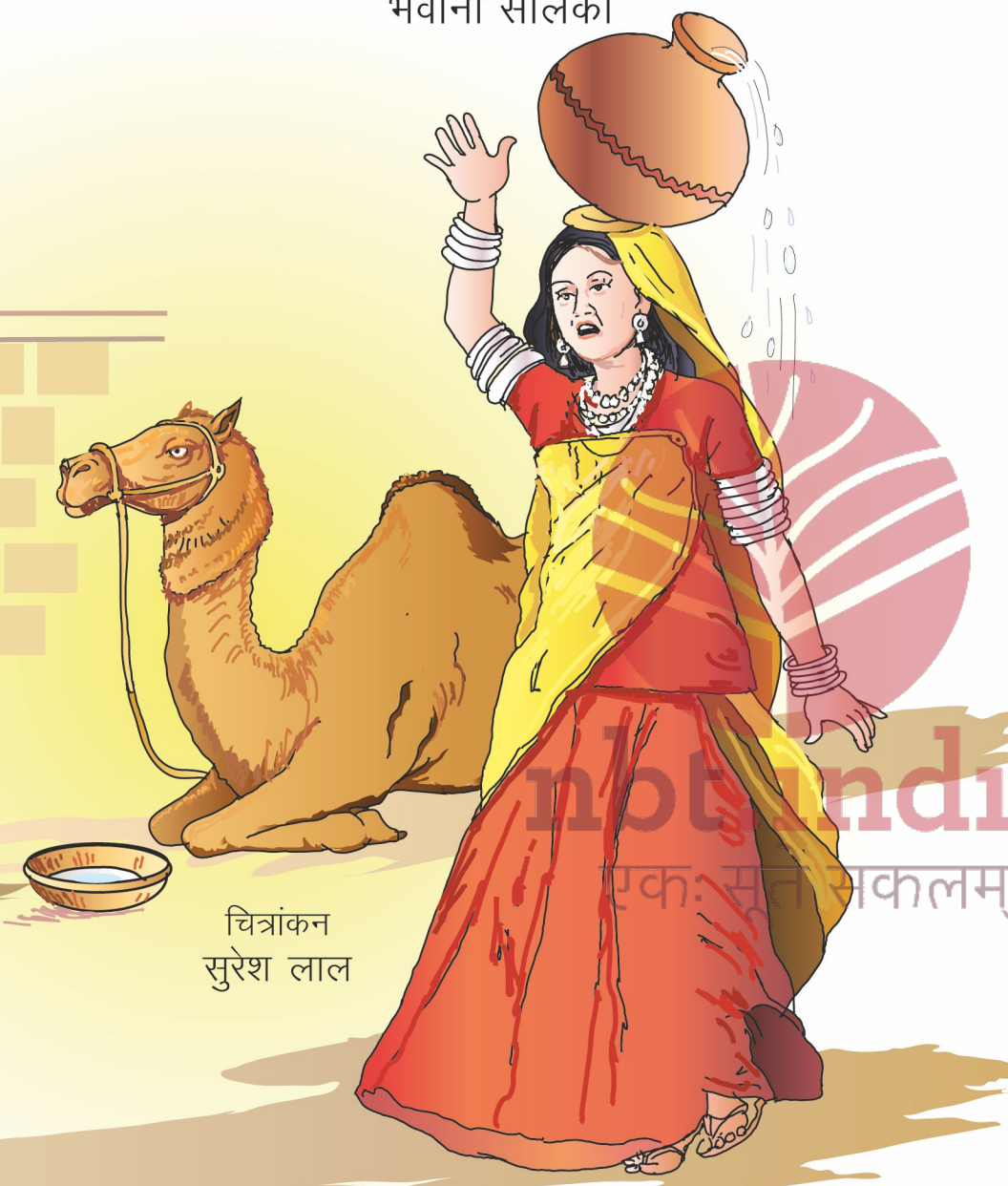

भवानी सोलंकी

चित्रांकन

सुरेश लाल

nbt.indi
एकः सूते सकलम्

नवसाक्षर साहित्यमाला

सरोज ने समझा
पानी का मोल

भवानी सोलंकी

चित्रांकन
सुरेश लाल

nbt.india
एकः सूते सकलम्

nbt.india
एकः सूते सकलम्

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

यह पुस्तक बीकानेर प्रौढ़ शिक्षण समिति एवं राष्ट्रीय पुस्तक न्यास,
भारत द्वारा आयोजित दो दिवसीय कार्यशाला में तैयार की गई।

ISBN 978-81-237-8804-3

पहला संस्करण : 2019 *(शक 1941)*
© भवानी सोलंकी
Saroj Ne Samjha Pani ka Mol *(Hindi Original)*

₹ 18.00

निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 द्वारा प्रकाशित
Website: www.nbtindia.gov.in

nbt.india
एकः सूते सकलम्

यह बात पश्चिमी राजस्थान की चरकड़ा पंचायत में बसी ढाणियों से जुड़ी है। शहर से दूर रेतीले धोरों में रहने वालों का जीवन काफी कठिन होता है। इनके लिए बिजली तो दूर की बात है, पीने के पानी का जुगाड़ करने में ही पूरा दिन बीत जाता है। शहर में तो नल खोलते ही पानी आ जाता है। जबकि गाँव-ढाणियों में महिलाएँ सिर पर घड़ा लेकर कोसों दूर से पानी लाती हैं। ये पानी तालाब अथवा डिग्गी से लेकर आते हैं। जिन परिवारों में पशुधन और गाड़ी है, वे ऊँटगाड़े या बैलगाड़ी पर भी पानी लाते हैं। इन लोगों ने अपने जीवन को इस तरह ढाल लिया है कि पानी की कमी अगर महसूस भी होती है, तो शिकायत नहीं करते।

पिछले दिनों ढाणी के एक किसान राजूराम के बेटे सीताराम की शादी शहर में हुई। राजूराम चरकड़ा

पंचायत के समझदार लोगों में माना जाता है। घर में नई बहू आने से हर कोई खुश था। शहर में रहने वाली बहू सरोज भी अपनी ससुराल में बहुत खुश थी। उसकी ससुराल में बड़ा खेत, ऊँट, गायें, बैल आदि सबकुछ थे। पर, पानी बरतने के तौर-तरीकों से सरोज बहुत ही हैरान थी। जबकि पीहर में पानी को लेकर कभी कोई बात ही नहीं होती थी। उसको यह सब अटपटा लगता था। शहर में और उसके पीहर में गरमी में सभी दिन में दो बार नहाते थे। सरोज के एक चाचा तो दिन में तीन बार भी नहा लेते थे।

सरोज देखती है कि गाँव में लोहे की एक बड़ी परात में बैठकर सब नहाते थे। फिर उसी पानी में धोने के कपड़े भिगोए जाते थे। उसी पानी से गोबर के उपले भी थाप लेते थे। आस-पास के पेड़-पौधों को सींचने में भी यही पानी काम में लिया जाता था।

घर के मुखिया तो उसके ससुर राजूराम थे। सास इमरती और ससुर राजूराम जी से पानी की बचत के बारे में वह हर समय हिदायतें सुनती रहती थी। घर में आई अपनी नई बहू सरोज को वे ऐसी बातें सीधे नहीं कहते थे।

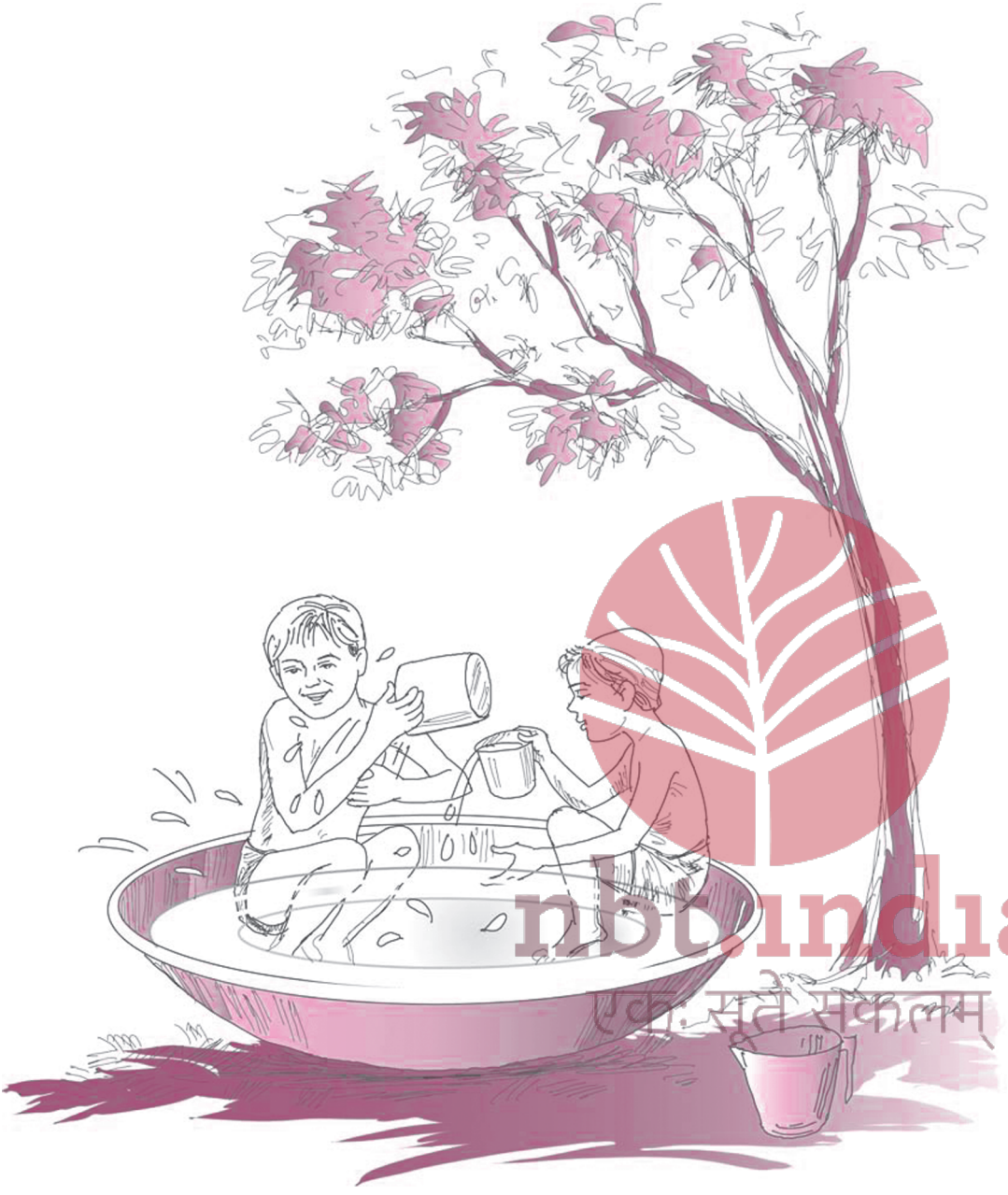

nbt.india
एकः सूते सकलम्

एक दिन सास-ससुर आँगन में बैठे बतिया रहे थे। उसी समय सरोज के हाथ से बिलौने के घी से भरी बाल्टी छूटकर नीचे गिर गई। पूरा घी गोबर से लिपे आँगन में बह गया। बिलौने का वह कीमती घी किसी काम का नहीं रहा। सरोज हक्की-बक्की रह गई। वह डर से थर्र-थर्र काँपने लगी। पास ही बैठे दोनों सास-ससुर ने धीरज से कहा, "बेटा बीनणी! यह क्या किया? पर, अब घबराओं नहीं, कोई बात नहीं। उतावली में ऐसा हो गया, आगे से ध्यान रखना।" ऐसा कहकर वे दोनों अपने काम में लग गए। सरोज भी घर के बचे काम को निबटाने में जुट गई। उसे ऐसा लगा कि जैसे कुछ हुआ ही नहीं। दिन हँसी-खुशी के साथ गुजरते जा रहे थे। सरोज का मन भी अब ससुराल में पूरी तरह लग गया था। सास-ससुर के लाड़-प्यार के चलते उसको पीहर की याद कम ही आती थी।

इसी बीच कोई दो-तीन महीने बाद सरोज से फिर एक गलती हो गई। इस बार उसके हाथ से पानी से भरा घड़ा फिसल गया। मिट्‌टी का वह घड़ा फूट गया। सारा पानी जमीन पर बह गया। पास में पेड़ की छाँव में बैठे ससुर चारपाई बुन रहे थे। पानी से भरा घड़ा फूटने पर ससुर जी बड़े नाराज हुए।

nbt.india एक: सूते सकलम्

सरोज ने अपने ससुर को पहले कभी इस तरह नाराज होते नहीं देखा था। उस पूरे दिन घड़ा फूटने के मामले में ससुर जी हर आने-जाने वाले को कुछ न कुछ कहते रहे। सरोज भी पूरे दिन बड़ी अनमनी रही। अपने ससुर के व्यवहार से वह बहुत हैरान थी। उसको समझ में नहीं आ रहा था कि घी से भरी बाल्टी के गिरने पर तो किसी ने भी अधिक कुछ नहीं कहा। बस! यह हिदायत भर दी कि मैं उतावली न करूँ। दूसरी ओर पानी से भरा घड़ा फूटने से पूरे घर में हंगामा हो गया। रोजाना बहू के हाथ से ही बनी रोटी खाने वाले ससुर जी ने सास को ही भोजन बनाने को कहा। ससुर जी के इस बदले व्यवहार से सरोज दुखी थी। वह बहुत हैरान भी थी। आखिरकार बहू से रहा नहीं गया। हिम्मत करके उसने ससुर के ऐसे बदले हुए व्यवहार के बारे में अपनी सास से पूछ ही लिया।

अब क्या था। बहू को सही-सही उत्तर मिलना ही था। वह मिला भी। सास इमरती ने शाम को खाने के समय मौका देखकर ससुरजी के सामने बहू की जिज्ञासा रखी। ससुर जी समझ गए कि बहू के मन में क्या चल रहा है? उन्होंने बहू को बुलाकर

nbt.india
एक: सूते सकलम्

बड़े धीरज से कहा, "बेटी! यह धोरों की धरती है। यहाँ बिना घी खाए तो महीनों बिताए जा सकते हैं। लेकिन, बिना पानी के तो एक दिन बिताना भी बहुत कठिन है।"

ससुरजी ने बहू सरोज को ठीक तरह समझाने के लिए गुजरात के साबरमती आश्रम की एक घटना सुनाई। महात्मा गांधी के इस आश्रम में घटी यह घटना ससुर राजूराम जी जानते थे। ससुर ने बताया कि देश की आजादी के आंदोलन के समय की बात

है। बापू तब साबरमती नदी के किनारे बैठे कुल्ला-दातुन कर रहे थे। पास में ही आंदोलन से जुड़े देश के बड़े नेता जैसे पंडित जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभ

nbt.india
एकः सूते सकलम्

भाई पटेल, खान अब्दुल गफ्फार खाँ समेत कई और नेता भी मौजूद थे। इसी बातचीत में बापू से देश की आजादी को लेकर चल रहे आंदोलन के बारे में चर्चा कर रहे थे। इसी बातचीत में बापू की असावधानी से पास में रखा पानी से भरा लोटा लुढ़क गया। पानी बिखर गया। थोड़ा-सा पानी ही लोटे में बचा। बापू

nbt.india
एकः सूते सकलम्

ने कुल्ला करने के लिए लोटा उठाया और बचे-खुचे कम पानी से किसी तरह मुँह-हाथ धोने की कोशिश की। बापू का चेहरा निराशा में डूब गया।

जरा से बचे पानी से कुल्ला करते देख सबको बहुत हैरानी हुई। वहाँ मौजूद कई लोगों ने बापू से कहा, "बापू! नदी तो बह रही है, क्या हुआ एक लोटा पानी गिर गया तो। हम एक लोटा पानी का भरकर और ला देते हैं।"

ससुर जी इतना कह थोड़ा ठिठके, "बेटा ध्यान से सुनना कि बापू ने उन सबको क्या उत्तर दिया।" बापू ने कहा, "हाँ! नदी तो बह रही है। पानी भी लबालब भरा है। पर, जो लोटा अब भर कर लाओगे उस पर मेरा हक नहीं है।" बापू ने आगे कहा, "यह नदी तो पूरे देशवासियों की प्यास बुझाने के लिए

nbt.india एक सूत्रे सकलम्

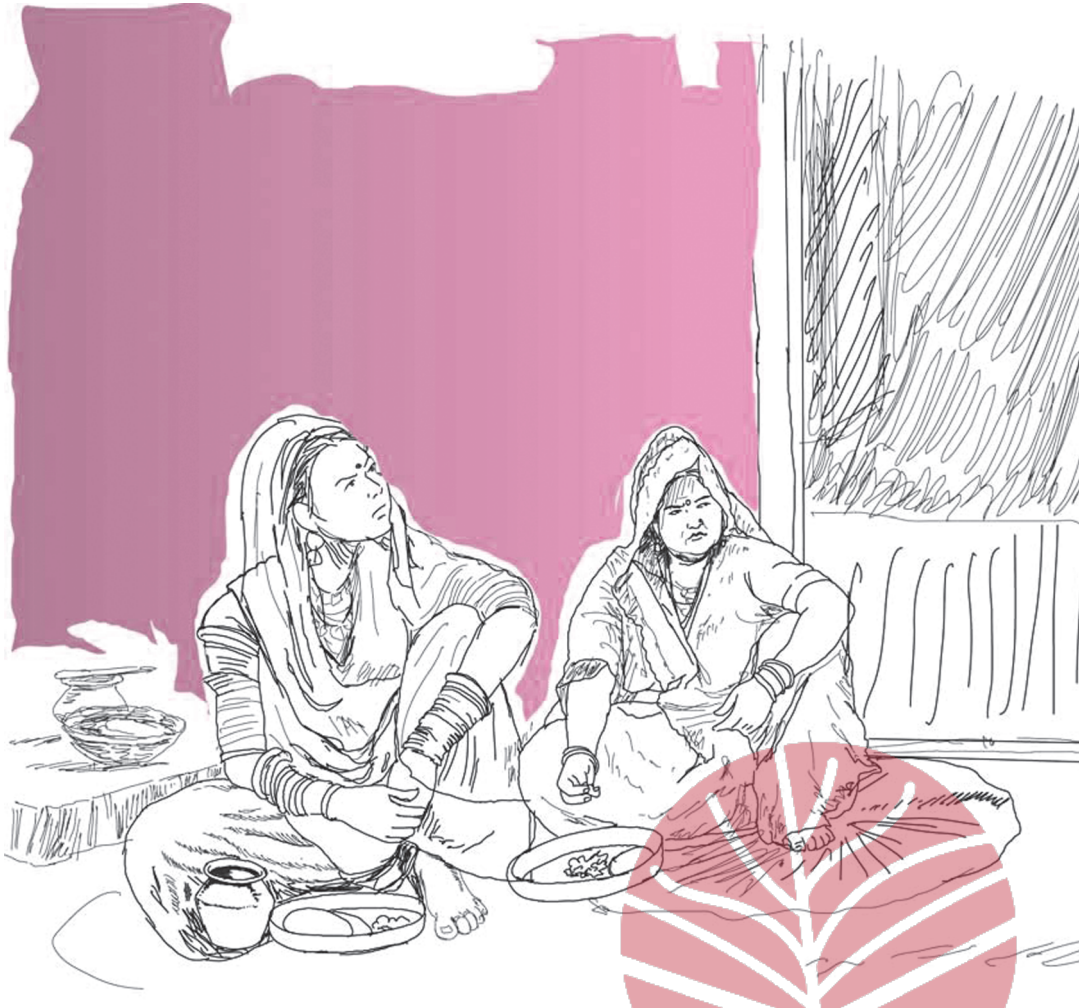

है। मेरे हिस्से का पानी मैं ले चुका हूँ। अब दूसरे लोटे के पानी पर मेरा कोई अधिकार नहीं है।" पानी बचाने वाली बापू की इस गहरी बात को सुनकर कौन ऐसा होगा जो पानी को बरबाद करेगा।

ससुर ने आगे कहा, "बेटा! पानी बचाने की बात हमारे पुरखे सदियों से करते आ रहे हैं। वे इस मामले में सजग रहे हैं। तभी हमें पानी नसीब हो रहा है।

nbt.india
एक: सूते सकलम्

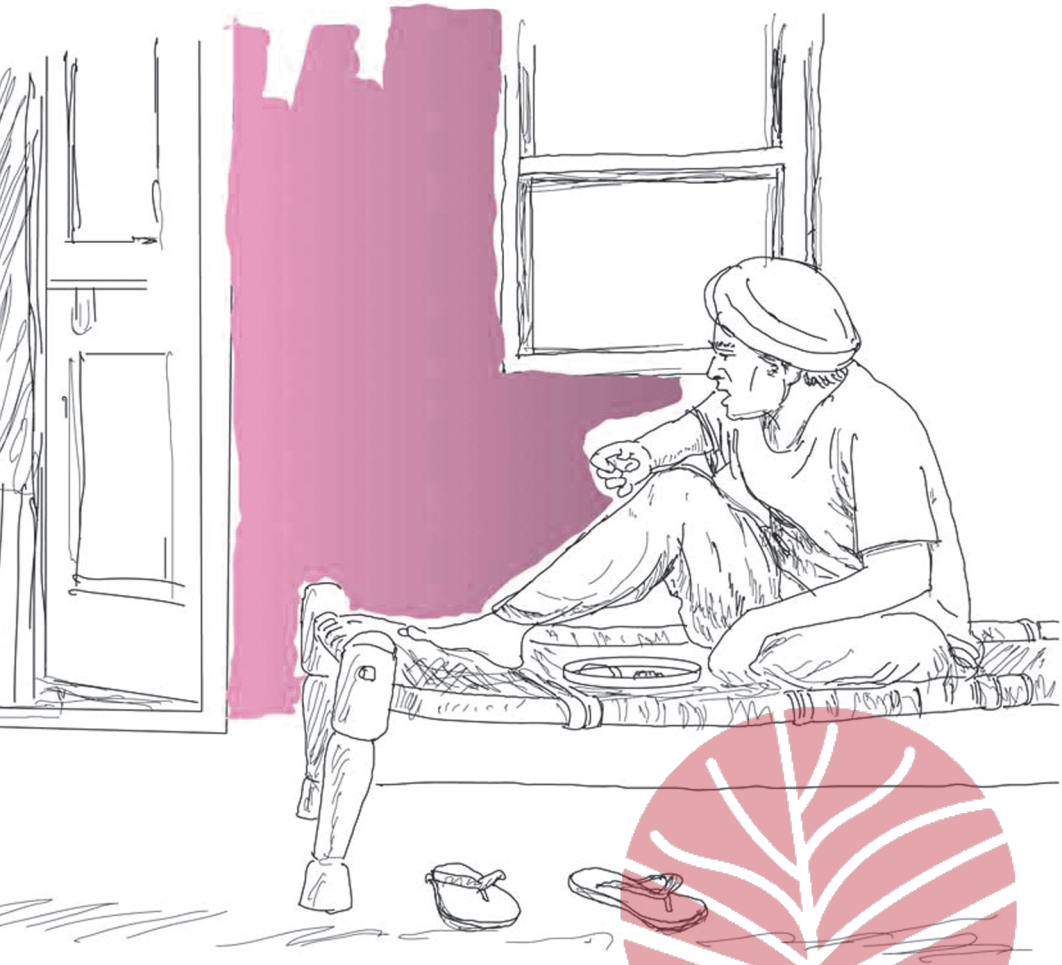

क्या हम चाहते हैं कि आने वाली हमारी पीढ़ी को पानी नहीं मिले? यदि हम चाहते हैं कि हमारे बच्चों को भी पीने का पानी मिलता रहे तो हमें सजग रहना ही होगा।"

वे फिर बोले, "बेटा! अब तो तुम पानी का मोल समझ ही गई होगी। हमारे लिए पानी घी से ज्यादा कीमती है।"

nbt.india
एकः सूते सकलम्

पानी बचाने की इस समझादारी और उसके मोल को सुनकर बहू गद्‌गद्‌ हो गई।

अब सरोज पानी बरतने को लेकर सजग रहने लगी। वह दूसरों को भी ऐसी ही सीख देने से नहीं चूकती।

• • •

nbt.india
एकः सूते सकलम्

मुद्रकः रॉयल ऑफसेट प्रिंटर्स, नई दिल्ली

nbt.indi

एकः सूते सकलम्

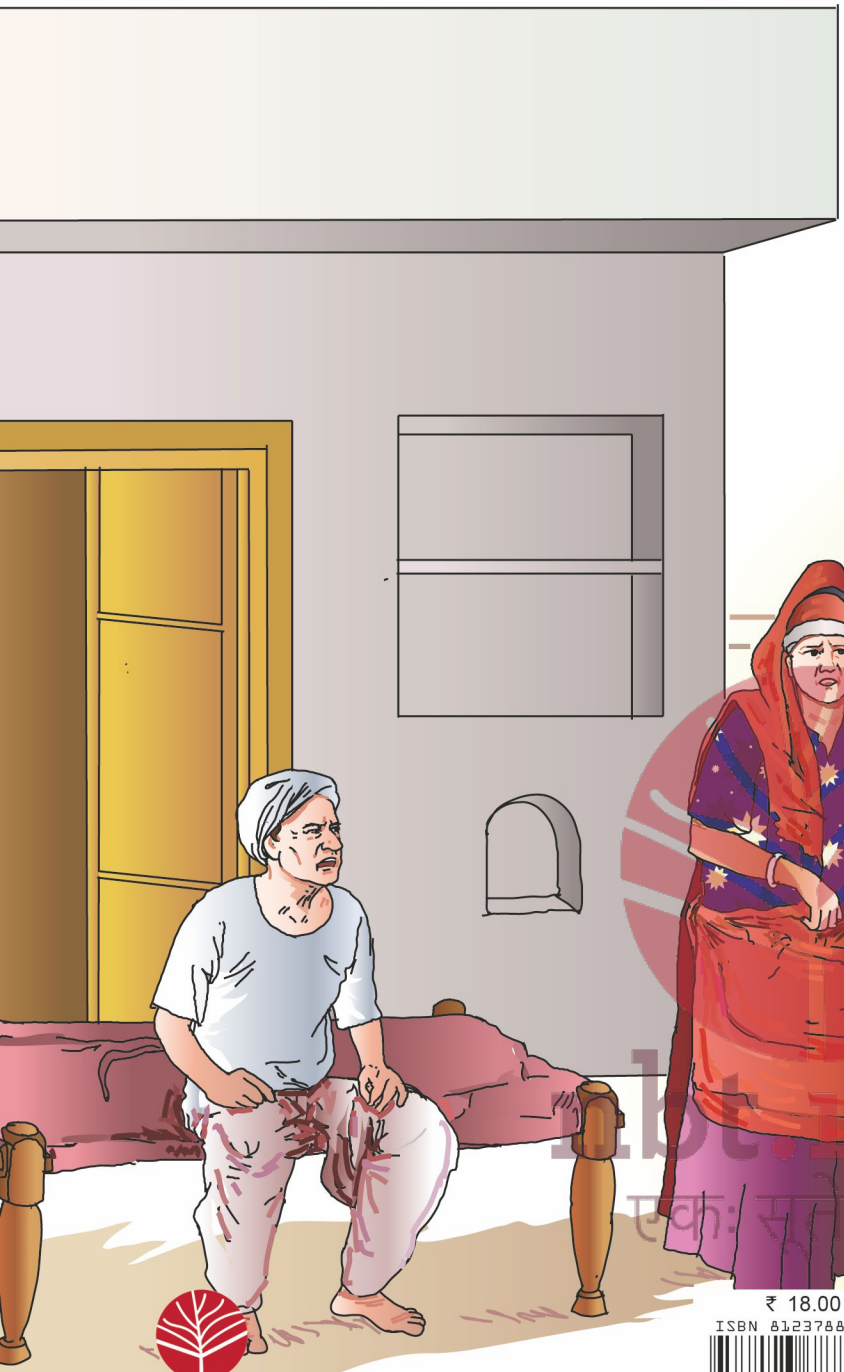

₹ 18.00
ISBN 8123788804-5
9 788123 788043
19200828

nbt.india
एकः सूते सकलम्

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA